अमर उजाला 07-11-2014

खुशखबरी

तीन नई प्रजातियां विकसित, चीनी की रिकवरी भी बढ़ेगी

गन्ने की नई प्रजाति बढ़ाएगी पैदावार

अमर उजाला ब्यूरो

कानपुर। नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) कानपुर, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ शुगरकेन रिसर्च लखनऊ और यूपी कौंसिल ऑफ शुगरकेन रिसर्च शाहजहांपुर के विज्ञानियों ने गन्ने की तीन नई प्रजातियां (सीओओ 238, सीओओ 239 और सीओएलके 94184) विकसित की हैं। इससे प्रति हेक्टेयर पैदावार 20 टन बढ़ जाएगी। चीनी की रिकवरी भी अच्छी होगी।

उत्तर प्रदेश में गन्ना और चीनी का कम उत्पादकता से विज्ञानी चिंतित हैं। एनएसआई के डायरेक्टर प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि देश में गन्ने की उत्पादकता प्रति हेक्टेयर 70 टन है। चीनी की रिकवरी 10.0 से 10.25 फीसदी तक आ रही है। उत्तर प्रदेश में आने के बाद यह स्थिति खराब हो जाती है। गन्ने की उत्पादकता प्रति हेक्टेयर 60 टन और चीनी की रिकवरी 9.0 से 9.25 फीसदी तक जाती है। इसे बढ़ाने के लिए गन्ने की नई प्रजाति विकसित की गई है। इनका सफल परीक्षण कर लिया गया है। अब गन्ने की नई प्रजाति के बीज किसान, चीनी मीलों को उपलब्ध कराने के प्रयास हो रहे हैं। एनएसआई ने 20 हेक्टेयर में बीज तैयार कराने का खाका बनाया है। जो प्रजातियां विकसित की गई हैं, वह मिट्टी और जल प्रबंधन के लिहाज से बेहतर हैं। कम पानी में गन्ने की अच्छी पैदावार प्राप्त की जा सकती है। विज्ञानियों की सोच है कि गन्ने की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता 80 टन की जाए। चीनी की रिकवरी 11 फीसदी के आसपास हो, तभी बेहतर रिजल्ट आ सकता है। इस दिशा में काम शुरू कर दिया गया है।

- तकनीक की मदद के लिए इस्राइल से किया गया समझौता
- एनएसआई ने 20 हेक्टेयर में बीज तैयार करने का बनाया खाका

गन्ने की नई प्रजाति पर इस्राइल और एनएसआई के बीच हुआ करार।

तकनीकी मदद करेगा इस्राइल

गन्ना की पैदावार और चीनी की रिकवरी बढ़ाने के लिए एनएसआई ने इस्राइल से समझौता किया है। इसी सिलसिले में गुरुवार को आईपीआई इस्राइल और भारत-चीन के कोआर्डिनेटर डॉ. इलदाद सोलोवस्की, आईआईपीआर गुड़गांव के निदेशक डॉ. एसके बंसल ने एनएसआई का दौरा किया। निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि इस्राइल में तकनीक की मदद से खेती की जाती है। यही तकनीक गन्ने की खेती में इस्तेमाल की जाएगी।

हिन्दुस्तान 07-11-2014

इजरायल की मदद से देश में बढ़ेगा गन्ना और चीनी, एनएसआई में निरीक्षण के बाद बनी सहमति

कम पानी में ज्यादा चीनी देगा गन्ना

एनएसआई

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

इजरायल की मदद से देश में कम पानी से गन्ना उत्पादन बढ़ाने और गन्ने से अधिक चीनी तैयार करने की टेक्नालॉजी हासिल की जाएगी। गुरुवार को इजरायल से आए डॉ. ईदाद सोलोवास्की और इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ पोटाश रिसर्च, गुड़गांव के निदेशक डॉ. एसके बंसल ने राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) के निदेशक प्रोफेसर नरेन्द्र मोहन से इस पर सहमति जता दी। फसल के प्रदर्शन के लिए संस्थान में दो एकड़ का स्थान भी चुन लिया गया है जिसमें मार्च से इजरायल की सलाह पर गन्ने का उत्पादन शुरू किया जाएगा।

उत्तर प्रदेश में गन्ना उत्पादन 60 टन प्रति हेक्टेयर है जबकि राष्ट्रीय औसत 70 टन प्रति हेक्टेयर है। इसी तरह गन्ने से चीनी प्रदेश में 9.0 से 9.25 प्रतिशत प्राप्त (रिकवर) की जाती है जबकि राष्ट्रीय औसत 10.0 से 10.25 प्रतिशत है। देश में गन्ने का उत्पादन और चीनी रिकवरी बढ़ाने के लिए अब इजरायल एनएसआई के साथ कार्य करेगा। इजरायल का दावा है कि वह 70 फीसदी कम पानी से गन्ना और चीनी उत्पादन बढ़ाने में सक्षम है और इसके लिए भारत विशेष रूप से एनएसआई की सहयोगी के रूप में मदद करेगा।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में गुरुवार को आए इजराइली दल ने कम पानी में गन्ना उत्पादन बढ़ाने की तकनीक देने पर सहमति जताई।

सबसे जरूरी मिट्टी की सेहत : एनएसआई में खेतों के बीच पहुंच कर आईपीआई कोआर्डिनेटर (भारत और चीन) डॉ. सोलोवास्की ने कहा कि आप अगर अच्छी से अच्छी प्रजाति का बीज ले लें और खूब पानी दें तो भी इस बात की गारंटी नहीं हो सकती कि इसका उत्पादन बढ़ जाएगा। उत्पादन और चीनी की रिकवरी बढ़ाने के लिए जरूरी है कि मिट्टी को गन्ने की जरूरत के मुताबिक तैयार करें। पहले मिट्टी का परीक्षण करें और कम से कम दो बार पोटाश की जरूरत को पूरा करें। अन्य जरूरी तत्वों को समय से देना आवश्यक है।

मार्च से शोध

एनएसआई निदेशक ने बताया कि मार्च से दो एकड़ खेतों पर काम शुरू हो जाएगा। इसकी मृदा का सबसे पहले टेस्ट कराया जाएगा। इसके बाद अच्छी वैराइटी के बीज से उत्पादन शुरू कराया जाएगा। इसकी निगरानी इजरायल के वैज्ञानिक करेंगे। इजरायली वैज्ञानिक ने आश्वस्त भी किया कि जिस तरह की तकनीक या सलाह की जरूरत पड़ेगी उसे उपलब्ध कराएंगे।

इसमें भी दे रहे मदद

इजराइली वैज्ञानिक ने पत्रकारों से वार्ता में कहा कि वह दुनिया के कई देशों जैसे अमेरिका, थाइलैण्ड और वियतनाम के अलावा ब्राजील आदि में भी गन्ना और अन्य फसलों का उत्पादन बढ़ाने में मदद कर चुके हैं। भारत में भी यह काम कर रहे हैं। दलहन और तिलहन में उत्पादन बढ़ा है।

दैनिक जागरण 07-11-2014

अब और रसीला होगा गन्ना

विशेष
दैनिक जागरण

एनएसआई में कृषि वैज्ञानिक डॉ. इलदाद व आईआईपीआर निदेशक डॉ. एसके बंसल ने देखे गन्ने के खेत। जागरण

कानपुर: अब और रसीले गन्ने की पैदावार के लिए इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ शुगरकेन रिसर्च लखनऊ व यूपी काउंसिल ऑफ शुगरकेन रिसर्च शाहजहांपुर ने तीन नई प्रजातियां विकसित की हैं। इनका परीक्षण राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) में किया जा रहा है। परिणाम उत्साहवर्धक मिले हैं।

गन्ने की नई प्रजातियों की बोवाई करने के लिए एनएसआई में मिट्टी परीक्षण का काम गुरुवार से शुरू हो गया। बोवाई से लेकर उत्पादकता तक का परीक्षण इंटरनेशनल पोटाश इंस्टीट्यूट स्विटजरलैंड के कृषि विज्ञानी व भारत व चीन के समन्वयक डॉ. इलदाद सोलोवस्की व पोटाश रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया के निदेशक डॉ.सुरिंदर कुमार बंसल की देखरेख में किया जाएगा। डॉ. इलदाद कई देशों में खेती को बढ़ावा देने की दिशा में काम कर चुके हैं। उन्होंने सीएसए कानपुर में भी काम किया है। डॉ. बंसल ने बताया गन्ने की खेती से पहले मिट्टी की जांच जरूरी होती है। इससे ही पता लगता है कि पोटाश समेत अन्य पोषक तत्व कब और कितनी मात्रा में डालने हैं।

उत्पादन में पिछड़ा प्रदेश

प्रदेश में चीनी उत्पादन लगातार घट रहा है। देश भर में जहां एक हेक्टेयर में 70 टन गन्ने का उत्पादन होता है, वहीं प्रदेश में पैदावार 60 टन है। एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र कुमार ने बताया उत्पादन की यह खाई पाटने में गन्ने की CoO 238, CoO 239 व CoLk 94184 जैसी प्रजातियां महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। इनके प्राथमिक परीक्षण में नतीजे बेहतर मिले हैं। पांच माह में पूरे परिणाम सामने होंगे। इसके बाद इन प्रजातियों के बीज किसानों तक पहुंचाए जाएंगे। जिससे एक हेक्टेयर में 80 टन गन्ना उत्पादन की संभावना है।

TIMES OF INDIA 07-11-2014

Sugar Institute joins hands with IPI to boost cane production

Abhinav. Malhotra@timesgroup.com

Kanpur: To step up production of sugarcane and to have high sugar produce, National Sugar Institute (NSI), has collaborated with International Potash Institute (IPI). The experts from this institute, including an Israeli agronomist will be doing soil treatment and nutrient management for increasing sugarcane production and having high produce. NSI aims to enhance sugarcane yield from 60 tonnes/hectares to atleast 80 tonnes/hectares.

Eldad Solovaski, (agronomist) IPI co-ordinator for India and China and SK Bansal, Indian Institute of Potash Research, Gurgaon visited NSI on Thursday and inspected the sugarcane farm situated on the institute campus and provided

ISRAELI BOOSTER

tips. The team then visited another farm and identified the plots where sugared and high yielding sugarcane varieties will be sown in March next year.

The two were also accompanied with NSI director Narendra Mohan and other senior staff members.

Solovaski said that potash is an important ingredient for the crops as a fertiliser but what quantity of it is to be given to the plants in the field varies. "We will do the trial in the farm here in the institute and share our expertise with the scientists. With this, we will help them in increasing the sugarcane production and subsequently the sugar produce," he said.

"Israel is a world leader in agriculture technologies. We are aiming at reducing the water requirement for sugarcane crop by 75% and achieving a sugarcane yield and recovery of 80 tonnes/hectare and 10.25% respectively," he said.

Narendra Mohan, institute director mentioned that diminishing sugarcane and sugar productivity is a major area of concern for last few years in the subtropical region in the country and UP in particular.

HINDUSTAN 07-11-2014

For better yield, sugar institute to tie-up with Swiss Potash centre

HT Correspondent
htcitykanpur@hindustantimes.com

KANPUR: The National Sugar Institute (NSI) would soon enter into a tripartite collaboration with Switzerland-based International Potash Institute (IPI) and Gurgaon-based Indian Institute of Potash.

Together, the three bodies will work on improving the existing sugar technologies available in the country.

They will also work for the better management of soil and water resources for raising the qualitative production of the sugar.

NSI director Dr Narendra Mohan said to explore the possibilities of joint collaboration, IPI coordinator (India and China) Dr Ildad Solovaski and director IIP Dr SK Bansal visited NSI on Thursday. Dr Solovaski, who hails from Israel said, "Israel was the global leader in agriculture technologies and as a collaborative work we are aiming at reducing the water requirement for the sugarcane crop by 75% and achieving the sugarcane yield of eighty tonnes per hectare and the recovery of sugar by 10.5% here."

IIP director Dr SK Bansal said quality improvement of the raw material would be the key for achieving sustainable profitability by sugar units side by side fetching higher returns to farmers.

NSI director informed the delegation that the institute has the facility for the cultivation of the sugarcane and the processing on its campus. The institute has gone ahead with the trials and development of several new high sugar and high yielding sugarcane varieties at its farm in collaboration with UP Council of Sugar Research Shahjahanpur and Indian Institute of Sugarcane Research, Lucknow. Dr Mohan said a proposal for undertaking a "Breeder Seed Development Program" has been submitted to the central government in this regard.